ध्येय जीवन का निर्माता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रत्येक मानव को अपने जीवन का ध्येय निश्चित करना पड़ता है। ध्येय के निश्चित होने से सफलता प्राप्त होती है। ध्येय के बिना जीवन पथ पर चलने के लिए अनेक विकल्प होते हैं, किन्तु सभी विकल्पों को चुनकर सफलता को प्राप्त करना असंभव नहीं तो कठिन जरूर है। जब ध्येय निश्चित होता है तो उसीको प्राप्त करने के लिए प्रयास किया जाता है। यदि परिश्रम सही दिशा में किया जाता है तो ध्येय की प्राप्ति हो जाती है। विद्यार्थी, राजनेता, व्यापारी, समाजसेवी, कृषक आदि वर्ग अपने–अपने ध्येय के अनुसार परिश्रम करते हैं। यदि परिश्रम सही दिशा में है तो सफलता का वरण करते हैं।

मोती प्राप्त करने के लिए मानव को समुद्र की गहराई में जाकर उसे ढूंढना पड़ता है। समुद्र के अन्दर अनेक घातक जीव रहते है जो मानव को पलक झपकते ही अपना निवाला बना सकते है। यदि सुरक्षित समुद्र से निकल आये तो गोताखोर मोती को प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार किसी भी अच्छी चीज को प्राप्त करने के लिए मानव को प्राण का भय भी रहता है और वस्तु के प्राप्त हो जाने पर मालामाल हो जाने का सौभाग्य भी प्राप्त रहता है। अतः बिना जोखिम के अच्छी चीजों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो लोग प्राण जाने के भय से डरकर समुद्र के किनारे बैठे रहते हैं या किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं लेते सफलता उनसे कोसों दूर रहती है। जीवन के हर पहलू पर इसे आजमाकर देखा जा सकता है। विद्यार्थी जब प्रतियोगात्मक परीक्षा की तैयारी के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर कर संलग्न हो जाते हैं तो उनके सामने यही उक्ति रहती है। यदि वे परीक्षा में सफल हो गये तो जीवनभर आनन्द ही आनन्द है और यदि परीक्षा में सफलता नहीं मिली तो जीवन कष्टप्रद रह सकता है। पपीहा पक्षी बड़ा ही स्वाभिमानी होता है। वह केवल स्वाती नक्षत्र के जल को ही पीता है और अन्य नक्षत्रों में जो वृष्टि होती है उसके जल को वह पान नहीं करता। उसको यह भरोसा रहता है कि वृष्टि अवश्य होगी और उसकी प्यास बुझेगी। आशा की किरण लेकर वह जीता है और उसको यह भरोसा रहता है कि स्वाती नक्षत्र की जल की बूंद उसके मुख में जायेगी और वह

जल से तृप्त होगा। स्वाती नक्षत्र में सीप के मुंह में गीरा हुआ जल मोती बन जाता है। मनुष्य को ध्येय की प्राप्ति के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। यदि परिश्रम सार्थक दिशा में होता है तो सफलता अवश्यंभावी है। यदि किसी कारणवश सफलता न भी मिले तो यह देखना चाहिए कि हमारे परिश्रम में क्या कमी रह गयी। लक्ष्य का निर्धारण करते समय मानव को अपनी शक्ति और संकल्प पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए उसे निराश नहीं होना चाहिए। मानव जीवन पृथ्वी के सम्पूर्ण जीव योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। मानव जीवन सुकर्म करने से प्राप्त होता है। अतः सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए। चोरासी लाख जीव योनियों में स्थान, योनि, गति, नारक, तिर्यक, मनुष्य और देव योनि प्रमुख हैं। पृथ्वी के गर्भ में नारकिय जीवों का निवास है। जो कुत्सित कर्म या बुरा कर्म करते है उन्हीं को यह योनि प्राप्त होती है। पृथ्वी पर मनुष्य और तिर्यक देवलोक में देवयोनि के लोग रहते हैं। जो जैसा कर्म करता है उसको वह योनि प्राप्त होती है यह शास्त्र सिद्ध है। 'होनहार विरवान के होत चीकने पात' अर्थात् जो पौधा आगे चलकर विकसित होता है उसके पत्ते छोटे रहने पर भी चीकने और वृद्धि को प्राप्त होते हुए से दिखाये देते हैं।

महापुरूषों की संगति उनके प्रवचन और आशीर्वाद से मानव जीवन सत्कर्मों की और उन्मुख होता है और जो सत्कर्म करता है उसका परिणाम भी अच्छा ही होता है। जिस प्रकार से बाह्य जगत है वेसे ही मानव का आंतरिक जगत भी है। मानव का आन्तरिक जगत् आत्मतत्व प्रधान है। आत्मा सर्वज्ञाता है, उसका ज्ञान सर्वव्यापक है। किन्तु वह दिखायी नहीं देता, केवल उसकी प्रतीति होती है। योगी लोग आत्मतत्व को अपने योग के द्वारा जान लेते है और परोक्ष रूप से उसका दर्शन भी कर लेते है। चर्म चक्षुओं से केवल बाह्य संसार दिखायी देता है। स्थूल से स्थूल को ही देखा जा सकता है, सूक्ष्म को नहीं देखा जा सकता। जिसकी अन्तःप्रज्ञा जागृत होती है केवल वहीं उस सूक्ष्म तत्व को जान सकता है और देख सकता है। द्रौपदी के स्वयंवर की कथा इस संबंध में विचारणीय है। जिस समय द्रौपदी का स्वयंवर रचा गया, उस समय देश–विदेश के बड़े–बड़े राजा महाराजा उपस्थित हुए। सब ने स्वयंवर के लिए जो शर्त रखी गयी थी, उसे पूरा करने का प्रयास किया। किन्तु सब का प्रयास निष्फल गया। धनुर्धर अर्जुन भी स्वयंवर में उपस्थित थे। जब लक्ष्य भेदने के लिए अर्जुन गये तो अर्जुन से पूछा गया

कि इस समय क्या देख रहे हो। अर्जुन ने कहा कि मैं इस समय मछली की आंख देख रहा हूं, जिसे वाण से भेदना है और सभी योद्धाओं ने इस प्रश्न का यह उत्तर दिया था कि मैं मछली को देख रहा हूं। सभी यौद्धाओं के उत्तर और अर्जुन के उत्तर में महान अन्तर दिखलायी देता है। जब मुकाबला प्रतिस्पर्धा पूर्ण हो तो ध्येय के प्रति सजगता बहुत आवश्यक है। अगर सभी राजाओं की तरह अर्जुन भी लक्ष्य के प्रति असावधान होते तो हो सकता है कि सफलता उनका वरण न करती। किन्तु अर्जुन ध्येय के प्रति पूर्ण समर्पित होकर लक्ष्य का भेदन किये और लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि सफलता प्राप्त करने के लिए पूर्ण मनोयोग से लक्ष्यबद्ध होना पड़ता है। तभी सफलता प्राप्त होती है।